12

अति सम्माननीय कलीसिया

''पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास। और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया जिसके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं; और अब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के उस लोहू के पास हो, जो हाबील के लोहू से उत्तम बातें कहता है'' (इब्रानियों 12:22-24)।

आप सबसे पसन्दीदा शाबाशी किसे मानते हैं? शैक्षणिक योग्यता को? अचानक धनवानों में गिने जाने को? खेलों में शानदार प्राप्ति को? लोक भलाई के किसी सम्मान को? या परिवार के साथ स्थायी सफलता को?

जब मैं कॉलेज का छात्र था तो हॉस्टल की उसी मंज़िल पर जहां मैं डोरमेटरी में रहता था, कई लड़के शाम को बाइबल पढ़ने तथा प्रार्थना करने के लिए इकट्ठे होते थे। कई बार हम अपनी आशिषों को गिनने या किसी से अपने विचार साझा करने के लिए कहते थे। एक शाम, उपासना में अगुआई कर रहे एक जवान ने हम सबसे एक प्रश्न का उत्तर देने के लिए कहा ''आप बाइबल के किस पात्र जैसा बनना चाहोगे?'' एक लड़के ने कहा, ''मैं तो इब्राहीम जैसा बनना चाहूंगा, क्योंकि वह बड़ा विश्वासी आदमी था।'' दूसरे ने कहा, ''मैं मूसा जैसा बनना चाहूंगा, क्योंकि उसने परमेश्वर को देखा था।'' एक और ने कहा, ''मैं तो प्रेरितों जैसा बनना चाहूंगा, क्योंकि वे यीशु के साथ रहे थे।'' एक और ने कहा, ''मैं तो हनोक जैसा बनना चाहूंगा, क्योंकि वह परमेश्वर के साथ चलता था।'' हर जवान ने बाइबल में से किसी न किसी ऐसे पात्र को चुना जिसमें कोई विशेष गुण था या उसे विशेष सम्मान मिला था और कहा कि उस आदमी का अनुभव पाना उसके लिए सबसे बड़ा सौभाग्य होगा।

मैं मानता हूं कि अनुकूल क्षण की इच्छा करना आसान होता है परन्तु हमें मिलने वाले विशेष अवसरों को नज़रअन्दाज करना आसान होता है। मसीही लोगों को अपनी उच्च स्थिति और मसीह में समृद्ध मीरास पर ध्यान लगाए रखना चाहिए। इब्रानियों 12:22-24 नये नियम के महान स्मरण दिलाने वालों में से एक है। यह उन अमूल्य खज़ानों को जो मसीही लोगों को मसीह के पास आने के कारण मिले हैं, संक्षिप्त करता है।

> पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया जिसके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं; और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के उस लोहू के पास आए हो, जो हाबील के लोहू से उत्तम बातें कहता है (इब्रानियों 12:22-24)।

लेखक ने इस पद को अपने पाठकों के मसीह और मसीहियत में परिवर्तित होने के लिए एक संकेत के रूप में आरम्भ किया। "तुम ... आए हो" उनके मसीही विश्वास को ग्रहण करने के समय के लिए सांकेतिक भाषा है। फिर उसने बारह अलग-अलग आत्मिक लाभ गिनाए जो मसीही लोगों को मिले हैं। इनमें से एक लाभ "पहलौठों की कलीसिया" वाक्यांश के साथ वर्णित किया गया है। अनुवादित यूनानी संज्ञा "पहलौठों" बहुवचन रूप है, और इसके बारे में प्रयुक्त यूनानी क्रिया बहुवचन की है; इसलिए वास्तव में "पहलौठों की कलीसिया" के रूप में वह मसीही लोगों की ही बात कर रहा था। यह विवरणात्मक वाक्यांश, जो पूरे नये नियम में केवल एक ही बार आता है, मसीही लोगों को मसीह की कलीसिया के रूप में रहते हुए विशेष दर्जा देने की बात बताता है।

सच्चाई

इब्रानियों की पुस्तक उन यहूदी मसीहियों के लिए लिखी गई थी जो निराश हो गए थे और मसीह में विश्वास का त्याग करने ही वाले थे। उनके आस पास होने वाला सताव और मूर्तिपूजकों के दबाव उनके मसीही सफ़र के हर कदम में पीड़ादायक कांटों की तरह थे। क्रोध में, बहुत से लोग यहूदी मत में लौटने की परीक्षा में आ गए थे, जिसमें से वे निकले थे, ताकि उन्हें इस निरन्तर होने वाली परेशानी से कुछ राहत मिल सके।

पूरी पत्री में, परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त लेखक ने अपने पाठकों को अलग-अलग कारण बताए कि उन्हें मसीहियत को सबसे बड़ा सौभाग्य और उस सबसे सुन्दर आशीष के रूप में मानना चाहिए जो परमेश्वर ने मनुष्य के रूप में दी है। पुस्तक का सबसे अच्छा निष्कर्ष यह है कि मसीह से यहूदी मत की ओर लौटना उत्तम से घटिया अर्थात वास्तविकता से परछाई की ओर लौटना होगा। इब्रानियों 12:22-24 में उसने प्रमुख लाभों को एक वाक्य में ज़ोर दिया जो मसीही व्यक्ति को मसीह में मिलते हैं। एक ही झटके में उसने किसी भी मसीही को मसीहियत को किसी दूसरे धर्म के साथ कभी न बदलने का कारण बताते हुए सबूत दे दिया।

पुराने नियम के समय परमेश्वर के लोग सीनै पर्वत के पास, जहां व्यवस्था दी गई थी आए थे। इसकी आग, धुआं, गरजना, और चमक से पाप के विषय में परमेश्वर की धार्मिकता और न्याय का पता चला था। इसकी तुलना में, मसीही लोग सिय्योन पर्वत अर्थात जीवित परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास आए हैं। वे मसीही युग अर्थात अनुग्रह

के युग में परमेश्वर के पास आकर स्वर्गीय यरूशलेम में आत्मिक तौर पर भाग लेते हैं। ऐसा करते हुए वे असंज़्य स्वर्गदूतों की संगति में आते हैं जो परमेश्वर की उपस्थिति में आनन्दित होते और स्तुति गाते हैं। वे पहलौठों की कलीसिया में आए हैं जिनके नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं, और पुराने नियम के युग के धर्मी या पवित्र लोगों के साथ मिल गए हैं और अब सिद्धता पा चुके हैं। यीशु के बलिदान के लहू से, या के द्वारा उसके पास आए हैं जो नई वाचा का मध्यस्थ है। संक्षेप में, यीशु के निमन्त्रण को स्वीकार करके उन्होंने संसार के उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना के अंतिम रूप से पूरा होने में योगदान दिया है।

इसलिए, मसीही लोगों को वे स्वर्गीय वरदान मिले हैं जो मसीही युग में विलक्षण हैं। वे मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं, जो अनुग्रह की जगह नियम और करुणा की जगह न्याय को महत्व देती थी। स्वर्गीय यरूशलेम में भाग लेकर जो परमेश्वर का नियम है और जिसमें पृथ्वी के हमारे संसार के साथ-साथ स्वर्गीय संसार भी शामिल है, उन्हें भाग मिलता है। परमेश्वर की सेवा, स्तुति और उससे प्रेम करते हुए वे असंज़्य स्वर्गदूतों के साथ जो श्रेष्ठतम जीव हैं, निरन्तर आराधना और सेवा में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं, मिल जाते हैं। मसीही लोग पहलौठों की अर्थात सबसे सज़्मानित लोगों की कलीसिया में आए हैं और उसका भाग बनकर रहते हैं। वे पुराने नियम के समय के धर्मी लोगों की आत्माओं के साथ मिल गए हैं जो अब सदा के लिए जीवित हैं। वे नई वाचा में यीशु के लहू के द्वारा जो अनुग्रह से दिया गया था, परमेश्वर के पास आए हैं।

मेमने की जीवन की पुस्तक में
नाम लिखाने के लिए
किसी भी सज़्मान से अधिक
आनन्द देने वाला होना चाहिए।

आशिषों की इस सूची में हमारी मुज़्य दिलचस्पी ''पहलौठों की कलीसिया'' का हवाला है। ''पहलौठों'' शज़्द असामान्य रूप से महत्वपूर्ण है ज़्योंकि इसमें सबसे बड़े सज़्मान का संकेत है। पुराने नियम में इस शज़्द को बड़ा सज़्मान दिया गया है। इसमें इसका अर्थ *प्राथमिकता* का सज़्मान हो सकता था, ज़्योंकि पहलौठे पुत्र को परिवार के दूसरे लड़कों से दोगुना सज़्मान मिलता था। यह शज़्द सज़्मान की *स्थिति* का संकेत था, ज़्योंकि इसका अर्थ किसी को उसकी श्रेष्ठता या चरित्र के कारण दी जाने वाली विशेषता हो सकता था।

पवित्र शास्त्र में यीशु को दोनों ही कारणों के लिए पहलौठे के रूप में दिखाया गया है। वह *प्राथमिकता में* पहलौठा है, ज़्योंकि वह मुर्दों में से जी उठने वालों में सबसे पहला है। पौलुस ने लिखा, ''वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे'' (कुलुस्सियों 1:18)। दूसरा, वह *पदवी में* पहलौठा है परमेश्वर ने उसे सब बातों में पहला स्थान देकर ऊंचा किया है। पौलुस ने आगे लिखा, ''वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रति रूप और सारी सृष्टि में

पहिलौठा है'' (कुलुस्सियों 1:15; तु. इब्रानियों 1:6)। इस पद में, वह प्राथमिकता में पहलौठा नहीं है ज़्योंकि वह सृष्टि नहीं है, बल्कि परमेश्वर पिता की तरह, उसमें भी खत्म न होने वाला जीवन है जो सदा-सदा तक रहता है। बल्कि, यह आयत उसे जो रचे गए संसार का *प्रभु* है, श्रेष्ठ स्थिति में पहलौठा दिखाती है।

यीशु से सज़्बन्ध में इसके उपयोग की तरह, ''पहलौठा'' शज़्द श्रेष्ठता के रूप में अलंकारिक ढंग से दिया गया है। कलीसिया ''पहलौठों की कलीसिया'' है, जिसे परमेश्वर ने विशेष अधिकार दिए हैं, जो पहलौठे पुत्र को मिलने वाले दोहरे सज़्मान की तरह है। यह अनुग्रह मसीह की कलीसिया के रूप में छुटकारा पाए हुओं को सबसे बड़े सज़्मान के रूप में मिलता है अर्थात यह सज़्मान प्राथमिकता के आधार पर इसलिए नहीं कि हम दूसरों से अच्छे हैं; बल्कि परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहराने से हमें दी जाने वाली स्थिति के कारण दिया जाता है।

सच्चाई की व्याज़्या

नये नियम में यह महिमामय सच्चाई प्राय: ''अलग करके'' दिखाई गई है।

आगे आने वाले या अग्रदूत से बड़ा

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मसीही युग में नहीं रहता था; जिस कारण, वह कभी कलीसिया में नहीं था। वह परमेश्वर का एक महान जन था, परन्तु उसे मसीही लोगों को मिलने वाली आशिषें कभी नहीं मिलीं। इस कारण यीशु ने यूहन्ना के लिए कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उनमें से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से कोई बड़ा नहीं हुआ; पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उससे बड़ा है'' (मज़्ती 11:11)। आने वाले मसीहा का मार्ग तैयार करने वाला कहलाने से बड़ा सज़्मान भला और ज़्या हो सकता है। यीशु ने संकेत दिया कि राज्य में लाभ यूहन्ना के अर्थात मसीह के आगे आने वाले के जूते पहनने से भी बड़ी बात है। राज्य में होने के कारण हर मसीही को यूहन्ना से जिसे मसीह को संसार में परिचित करवाने का सौभाग्य मिला था, अधिक सज़्मान मिला है।

आश्चर्यकर्म करने वाले से बड़ा

यीशु की आरज़्भिक सेवकाई के समय, सज़्र चेलों को विशेष अर्थात सीमित आज्ञा देकर बाहर भेजा गया था। यीशु ने उन्हें वहां जहां उसने प्रचार करने या सिखाने के लिए जाना होता था, दो-दो करके ''दल बनाकर'' पहले से भेजा (लूका 10:1)। यीशु ने उन्हें आश्चर्यकर्म करने और दुष्टात्माओं को निकालने की सामर्थ और अधिकार दिया। लौटने पर वे इस बात से आनन्दित थे कि दुष्टात्मा उनके वश में हैं ज़्योंकि यीशु के नाम में दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों को आज्ञा देकर उन्होंने दुष्टात्माओं को निकाला था।

मैं कल्पना नहीं कर सकता कि आश्चर्यकर्म करना कैसा लगता होगा। किसी ऐसे व्यज़्ति के पास जाने की जिसे खतरनाक बीमारी हो और आश्चर्यकर्म से उसे चंगा होने की कल्पना करें। अपने अन्दर से उस ईश्वरीय सामर्थ के निकलने और ऐसी चंगाई देने पर आप

कितने आनन्दित होंगे! आश्चर्यकर्मों का युग पहली शताज़्दी के समाप्त होने के साथ ही खत्म हो गया था, जब परमेश्वर का प्रकाशन अर्थात बाइबल पूरी हो गई। बेशक आज आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ किसी के पास नहीं है, परन्तु हम आसानी से देख सकते हैं कि वापस आकर चेले दुष्टात्माओं के निकालने की शज़्ति पाने पर कितने खुश होते हैं!

जब इन चेलों ने यीशु को अपने आनन्द का कारण बताया, तो उसने उन्हें एक अजीब बात कही थी: "देखो, मैंने तुज़्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुज़्हें कुछ हानि न होगी। *तौभी इस से आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुज़्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुज़्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं*" (लूका 10:19, 20)। अन्य शज़्दों में, हमारे प्रभु ने उन्हें बताया कि वे आश्चर्यकर्म करने से बढ़कर किसी और बड़ी बात पर ध्यान लगाएं। जीवन की पुस्तक में उनके नाम लिखे होना अलौकिक शज़्ति मिलने से कहीं उज़्म था।

ये चेले उस समय में रहते थे जब मूसा की व्यवस्था लागू थी (इब्रानियों 9:15-17)। मूसा के युग में जीवन की पुस्तक में नाम लिखा होना आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ होने से बढ़कर था, तो मसीही युग अर्थात समय के अंतिम युग और उद्धार की परमेश्वर की योजना के पूरा होने के युग में जीवन की पुस्तक में नाम लिखा होना कितनी बड़ी बात है! इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के साथ, मसीही युग में कलीसिया के लोग वे हैं जिनके नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं। आश्चर्य नहीं कि उन्हें पहलौठों की कलीसिया, अर्थात सबसे सज़्मानित लोगों की कलीसिया के रूप में बताया गया है!

पृथ्वी के किसी भी सज़्मान से बढ़कर

मेमने की जीवन की पुस्तक में नाम लिखाना किसी भी दूसरे सज़्मान और आनन्द से बढ़कर होना चाहिए। पौलुस ने फिलिप्पी में रहने वाले सुसमाचार में अपने सहकर्मियों के बारे में कहा, "जिन के नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं" (फिलिप्पियों 4:3)। सरदीस की कलीसिया में हर उस व्यज़्ति से जिसने अपने वस्त्र इस संसार की भ्रष्टता से गंदे नहीं किए थे, यीशु ने कहा, "मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूंगा" (प्रकाशितवाज़्य 3:5)। यूहन्ना ने लिखा कि जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं होंगे उन्हें आग की झील में फैंक दिया जाएगा (प्रकाशितवाज़्य 20:15)।

रोम के शाही नगर में वहां के सब नागरिकों के नामों का एक रजिस्टर या एक मुज़्य सूची होती थी। पहली सदी के लोगों को, इब्रानियों की पत्री का लेखक कह रहा था कि रोमी नागरिकता की सूची से भी महत्वपूर्ण सूची स्वर्ग में है। रजिस्टर में नाम होना सबसे बड़ा सज़्मान है। यह उद्धार पाए हुओं की परमेश्वर की सूची है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा कि यह सज़्मान कलीसिया के लोगों को मिला है!

पुराने नियम के सज़्मान से बड़ा

इब्रानियों 11 अध्याय "परमेश्वर के विश्वासी लोगों के लिए प्रसिद्धि" की जगह है।

हाबिल, हनोक, नूह, इब्राहीम, सारा, याकूब, यूसुफ, और मूसा सहित इस विशेष चक्र में सत्रह पुरुष स्त्रियों की तस्वीरें दी गई हैं। परमेश्वर द्वारा पुराने नियम के इन लोगों को सारे संसार द्वारा याद रखने के लिए पवित्र शास्त्र के इस विशेष भाग में रखा गया था। आश्चर्य की बात यह है, कि इन नायकों और नायिकाओं के लेखक ने कहा, ''विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई, तौभी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली। ज़्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिए पहिले से एक *उज़म बात* ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुंचें।'' (इब्रानियों 11:39, 40)। ''उज़म बात'' प्रभु के आने और कलीसिया को कहा गया है। पहलौठों की कलीसिया के रूप में, हमें ऐसे सज़्मान की आशीष मिली है जिसकी ओर इब्रानियों 11 अध्याय के महान लोग केवल पूर्वानुमान से ही देख सकते थे। उन्होंने इसे वास्तविकता के रूप में नहीं देखा; बल्कि एक प्रतिज्ञा के रूप में केवल इसका स्वाद चखा था।

किसी भी सांसारिक स्थिति से बढ़कर

चार्ल्स हौज एक बार अमेरिका में मसीह की सबसे बड़ी कलीसियाओं में से एक, नैशविल्ले, टेनिसी में मेडिसन चर्च के लिए प्रचार कर रहा था। वहां, वह यह देखने के लिए गया कि उनकी बिल्डिंग कैसे बनी है और उसमें ज़्या रखा है। इधर-उधर घूमते हुए उसने एक कमरे में झांककर देखा कि एक बूढ़ी स्त्री डाक में भेजने के लिए पत्र बंद कर रही थी। वह उससे पूछने लगा, ''आप कौन हैं?'' उस स्त्री ने तुरन्त उज़र दिया, ''मैं इस कलीसिया की सबसे महत्वपूर्ण स्त्री हूं!'' वह कहने लगा, ''आप सबसे महत्वपूर्ण हैं? आपको कैसे मालूम?'' उस स्त्री ने उज़र दिया, ''ज़्योंकि भाई नॉर्थ कहते हैं कि मैं सबसे हटकर हूं।'' उनके महान प्रचारक इरा नॉर्थ ने उसे सही बताया था कि उसका काम किसी भी दूसरे व्यज़्ति की तरह महत्वपूर्ण है और वह भी ऐल्डरों, डीकनों, और प्रचारकों की तरह ही महत्वपूर्ण है!

परमेश्वर कहता है, ''जब तुम मेरी कलीसिया में आते हो, तो मैं तुज़्हें सज़्मान देता हूं और तुज़्हें पहलौठों की कलीसिया कहता हूं। मैं तुज़्हें यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के काम और स्थिति से अधिक महत्व देता हूं। मैं छोटे-बड़े, सब को एक जैसा सज़्मान देता हूं। यदि तुम मेरी कलीसिया में हो, तो तुम अद्वितीय ढंग से महत्वपूर्ण हो।''

सच्चाई लागू हुई

सच्चाई यह है कि नये नियम की कलीसिया पहलौठों की कलीसिया ही है। कलीसिया के प्रत्येक सदस्य से हमें मसीह और मनुष्य तक पहुंचने की प्रेरणा देते हुए निजी तौर पर इसे गहरा सज़्मान मिलना चाहिए। हमें इस सच्चाई को जीवन में विशेष तौर पर लागू कैसे करना चाहिए?

पहले, *हमारी कृतज्ञता बहुत अधिक हो।* परमेश्वर ने न केवल हमारा उद्धार किया है बल्कि हमें अति सज़्माननीय जगह भी दी है। उसने हमें अपनी कलीसिया ही नहीं बल्कि पहलौठों की कलीसिया अर्थात दोहरे सज़्मान वाली कलीसिया बनाया है! इसके प्रकाश में हमारे लिए पौलुस की बात को मानना कठिन नहीं होना चाहिए कि ''हर बात में धन्यवाद

करो; ...'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:18)।

दूसरा, *दूसरों के लिए परमेश्वर के अनुग्रह की अभिव्यक्ति बनें।* उसका अनुग्रह यीशु में प्रकट हुआ (तीतुस 2:11); और संक्षिप्त परन्तु बहुत ही महत्वपूर्ण अर्थ में, हम उसके अनुग्रह को अपने द्वारा अपने आस पास के लोगों को प्रकट कर सकते हैं। हम इस अद्भुत सज़्मान को जो परमेश्वर ने हमें दिया है उन लोगों में बांटना चाहते हैं जिन्हें इसका पता नहीं है।

तीसरा, *परमेश्वर की महिमा का वर्णन करें,* जिसने हमें अंधकार में से अपनी अद्भुत रोशनी में बुलाया है; ज़्योंकि हम पहले तो लोग नहीं थे, परन्तु अब परमेश्वर के लोग हो गए हैं (1 पतरस 2:9, 10)। परमेश्वर की उसके अनुग्रह की महिमा के लिए स्तुति करना हमारे लिए सांस लेने की तरह ही स्वाभाविक है।

चौथा, उन लोगों के रूप में जो परमेश्वर की निजी सज़्पज़ि हैं, *परमेश्वर की सेवा में लगे रहें।* ज़्योंकि हमें एक ऐसा राज्य मिला है जो हिलाया नहीं जा सकता, इसलिए हम परमेश्वर को अपनी कृतज्ञता, भय तथा भज़्ति के साथ ग्रहण योग्य सेवा करके दिखा सकते हैं (इब्रानियों 12:28)। हम अपनी देहों को परमेश्वर के सामने जीवित और पवित्र बलिदान करके चढ़ाएं (रोमियों 12:1)।

सारांश

इब्रानियों की पत्री के लेखक के अनुसार नए नियम की कलीसिया, पहलौठों की कलीसिया है। परमेश्वर ने अपनी कलीसिया को अनन्त और स्वर्गीय महिमा दी है जिसके सामने इस संसार की प्रशंसाएं बेकार राख और सूखे पौधों की तरह हैं।

एसाव का उदाहरण देकर लेखक ने हमें चेतावनी दी है कि हम परमेश्वर की महिमा से गिर न जाएं (इब्रानियों 12:15, 16)। विश्वास से गिरकर, हम उन अनन्तकालिक आशिषों को जो हमें मिली हैं, खो सकते हैं (1 पतरस 1:10-13)। एसाव एक अपवित्र आदमी था जो अनन्तकाल के लिए नहीं बल्कि वर्तमान संसार के लिए जी रहा था।

''अपवित्र'' शज़्द मूलतः सैकुलर से जुड़ा है। यह लातीनी शज़्द *profanus* से निकला शज़्द है। हर मन्दिर के बाहर (लातीनीः *fanum*) सबके लिए खुली भूमि का क्षेत्र होता था। इस क्षेत्र के विपरीत मन्दिर के घेरे का क्षेत्र होता था। इसे पवित्र भाग माना जाता था, जबकि खुली जगह को जहां लोग इकट्ठे होते थे, अपवित्र माना जाता था। एसाव एक अपवित्र आदमी था; उसके जीवन में कोई पवित्र घेरा अर्थात समझौता न करने वाला मन नहीं था। अपना जन्माधिकार बेचने के कार्य में उसने अपना स्वभाव अर्थात अपना मन दिखा दिया। वह अनन्तकाल के विचार के बिना एक सांसारिक जीवन के रूप में रहता था जिसका उद्देश्य और भविष्य केवल सांसारिक था। बाद में, जब एसाव ने अपनी आशीष दोबारा पानी चाही, तो बहुत देर हो चुकी थी। उसने अपने अमूल्य अवसर बेच दिए थे और मन फिराने का समय बीत चुका था। एसाव के व्यर्थ और अपवित्र जीवन से आपको अपने मन को अनन्त महिमा पर जो कलीसिया के रूप में आपकी है, ध्यान लगाने की आवश्यकता की चेतावनी मिलनी चाहिए। आपको परमेश्वर की निजी सज़्पज़ि अर्थात पहलौठों की कलीसिया के रूप

में जीवन बिताने से कोई चीज़ न रोके। परमेश्वर आपको वह सज़्मान देने की प्रतीक्षा कर रहा है जो आपको पहले कभी नहीं मिला। मनुष्य केवल आपको नाशवान मुकुट का इनाम दे सकते हैं, परन्तु परमेश्वर आपको अब और तत्पश्चात सदा के लिए जीवन देकर सच्चा जीवन दे सकता है।

अध्ययन व चर्चा के लिए प्रश्न

1. सज़्मान ज़्या है ?
2. यदि आप बाइबल के किसी पात्र की तरह जीवन बिताना चाहते हैं तो आप उनमें से कौन सा चुनेंगे ? कारण भी बताएं कि ज़्यों।
3. इब्रानियों 12:22 में "तुम ... आए हो" शज़्द किसके लिए हैं ?
4. उन मसीही लोगों की परिस्थितियों का वर्णन करें जिनके नाम इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई थी।
5. उन कुछ आशिषों की सूची बनाएं जो मसीही लोगों को तो मिली हैं परन्तु विश्वास इस्राएलियों को नहीं मिली थीं ?
6. पवित्र शास्त्र में "पहलौठों" शज़्द के दो इस्तेमाल बताएं।
7. यीशु के लिए "पहलौठा" शज़्द का इस्तेमाल कैसे होता है ?
8. कलीसिया के सज़्बन्ध में "पहलौठे" का इस्तेमाल कैसे किया गया था ?
9. ऐसे उदाहरण दें जो मसीही लोगों को कलीसिया में मिलने वाले बड़े सज़्मान पर प्रकाश डालते हैं।
10. समझाएं कि स्वर्ग में नाम लिखा होने का ज़्या अर्थ है।
11. इब्रानियों 11:39, 40 में "उज़्म बात" की व्याज़्या करें।
12. हमें उस सज़्मान को जो मसीह में हमें दिया गया है, कैसे स्वीकार करना चाहिए ?